

zeit: नाद्याच्च तथातरा M. 2, 56. Jāg. 3, 20. — f) zwischen durch, dann und wann Kathās. 21, 11. — g) für eine Zeitlang, nur inzwischen: एष लयतरा शोषो भविष्यति मरुत्तल R. 3, 8, 13. — 2) praep. mit dem acc. P. 2, 3, 4. Vop. 8, 7. a) zwischen AK. 3, 5, 10. H. 1338. an. 7, 58. MbD. avj. 70. mit dem loc.: मुमन्त्रस्य बभूवात्मा चक्रयोरिव चात्तरा R. 2, 40, 44. अतरा वेदिर्मतवारणयोरिव Ragh. 12, 93. पादयोः शकटं चक्रुस्तेरावुद्ध-खलम् R. 6, 96, 13. Śāh. D. 76, 8. mit folgend. acc.: अतरा रंपती RV. 10, 162, 4. अतरा श्वावापृथिवी VS. 13, 25. 29, 6. AV. 3, 15, 2. 4, 16, 5. 5, 20, 7. Çat. Br. 14, 6, 8, 3. (= Brh. Ār. Up. 3, 8, 3.) यदतरा प्रयाजानुयाजान् 1, 8, 4, 9. यदतरा पितरं मातरं च Brh. Ār. Up. 6, 2, 2. R. 4, 43, 51. P. 2, 3, 4, Sch. AK. 3, 4, 52. H. 613. 1338, Sch. mit vorang. acc.: तात्स्पर्यमानान्गायत्र्य-तरा तस्थौ Çat. Br. 1, 4, 4, 34. 3, 7, 4, 12. ते (नामद्वये) यदतरा तद्वत्स Kānd. Up. 8, 14. Trik. 2, 1, 6. eingeschoben: तामतरा च सरितं चित्रकूटं च पर्वतम् R. 2, 92, 12. mit dem regierten Worte componirt, vgl. अतरांस, अतराप्रङ्गम्. zwischen durch: तिरस्करिणामतरा R. 2, 15, 20. während: अतरा कथाम् Śāh. D. (1828) 177, 17. — b) ohne H. an. 7, 58. MbD. avj. 70.

अतरांस (अतरा zwischen + अंस Schulter) Brust: अथातरांसो ऽभिमुख्य जयति (Kāṭy. Çr. 15, 7, 4: उरो ऽस्यालभते) Çat. Br. 5, 4, 4, 5. एवमिव हि योषो प्रशंसति पृथुश्रेणिर्विमृष्टातरांसो (Sch.: श्रेणिषो विमृष्टं न्यूनमत्त-रमवकाशो ययोः तावन्तौ यत्पाः सा) मध्ये संप्राच्यते 1, 2, 5, 16. अतरागार (अतर + आगार) das Innere eines Hauses Jāg. 2, 31. अतरात्मन् (अतर + आत्मन्) m. die im Innern wohnende Seele, Herz Taiṭṭ. Up. 2, 2. अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो ऽत्तरात्मा Çvetāçv. Up. 3, 13. सर्वभूता-त्तरात्मा 6, 11. ब्राह्म्यात्मा — अतरात्मा — परमात्मा पुरुषः Ātmop. in Ind. St. II, 56. सतीश्चात्तरात्मनः M. 6, 63. गतिमस्यात्तरात्मनः 73. जीवसं-तो ऽत्तरात्मान्यः सकृजः सर्वदेहिनाम् 12, 13. यत्कर्म कुर्वतो ऽस्य स्या-त्परितोषो ऽत्तरात्मनः 4, 161. मद्भतेनात्तरात्मना Bhag. 6, 47. प्रव्यथिता-त्तरात्मा 11, 24. प्रकृष्टेनात्तरात्मना N. 5, 29. 20, 33. R. 1, 10, 19. कृतार्थेना-त्तरात्मना 7. भयप्रणोदितात्तरात्मा शशकः Pañkāt. 163, 10. द्रवस्वच्छात्त-रात्मनः Hir. I, 93. अद्यखिनात्तरात्मा Megh. 33. करुणावृत्तिराद्रात्तरात्मा 91. विशदः — अतरात्मा Çik. 97. द्वितीयं ते ऽत्तरात्मानं वाम् R. 2, 4, 42. सत्राख्यातः करुणो ममात्तरात्मा प्रसीदति 98, 21. लदर्शने प्रसन्नो मे सत्रा-ख्यात्तरात्मा das ganze Selbst Vikr. 72, 5. Durch अतरात्मन् wird AK. 3, 4, 189. अतर (Colebr.: supreme soul) erklärt.

अतरात्मेषकम् (von अतर oder अतरा + आत्मन् — ऽष्टका) adv. = आ-त्मनश्चेष्टकानो चात्तराले Kāṭy. Çr. 17, 2, 5. bei Manbh. zu VS. 12, 65.

अतरादिष् (अतरा + दिष्) f. Zwischengegend (der Windrose) Praçnop. 1, 6. — Vgl. अतरदिशा, अतरदेश.

अतरापण (अतर + आपण) m. ein Markt im Innern (der Stadt): (अ-योध्याम्) सित्तरथ्यात्तरापणाम् R. 6, 112, 42. (पुरीम्) सुविभक्तात्तरापणाम् 1, 5, 8. (Schl. 10: ०पणा) 2, 57, 15. ist wohl auch अन्वतरापणम् statt ०रापणम् zu lesen.

अतरापत्या (अतर + अपत्या) adj. f. schwanger ÇKDr.

अतराभर (अतरा + भर) adj. in medium conferens, herbeischaßend, mittheilend: स नः शक्रश्चिदा शक्रदानवौ अतराभरः । इन्द्रे विश्वामित्रति-भिः ॥ RV. 8, 32, 12.

अतराय (von इ mit अतर) 1) adj. zwischen Etwas (gen.) tretend: अस्य खन्तु ते वापापातवर्तिनः कृञ्जसारस्यात्तरायौ तपस्विनौ संवृता Çik. 6, 14,

v. l. — 2) m. Hinderniss AK. 3, 3, 19. H. 1509. Pañkāt. III, 102. 183, 3. Ragh. 3, 45. Śāh. D. 56, 16. Vgl. अन्तरायम्.

अतरायणा s. u. अन्तरायणा.

अतराराम (अतर + आराम) adj. im Innern sich freuend Bhag. 3, 21.

अतराल (अतर + आल) n. Zwischenraum AK. 1, 1, 2, 7. P. 2, 2, 6. दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरतरालं दक्षिणपूर्वा Sch. प्रतिमानं प्रतिच्छाया-गजदत्तात्तरालयोः Trik. 3, 3, 246. अतराले unterweges Pañkāt. 53, 17. 238, 21. वर्षानो सातरालानाम् der Kasten mit den Zwischenkasten M. 2, 18.

अतरालक (von अतराल) n. dass. Rāgan, im ÇKDr.

अतरावेदी (अतरा + वेदी) f. ein auf Säulen ruhender Vorbau Trik. 3, 3, 115.

अतराप्रङ्गम् (von अतरा + प्रङ्ग) adv. zwischen den Hörnern Kāṭy. Çr. 6, 3, 26. bei Manbh. zu VS. 6, 8.

अतरिक्त n. der Lustraum (unterschieden vom Himmel), nach vedi- scher Anschauung das mittlere der drei grossen Lebensgebiete, Naigh. 1, 3. Nir. 7, 10. वेदा यो वीनो पद्मत्तरिक्तेण पतताम् RV. 1, 23, 7. यान्यो रज्ञौ युपितमत्तरिक्ते AV. 4, 25, 2. केनेदमूर्धं तिर्यङ्कात्तरिक्तं व्यचो क्तिम् 10, 2, 24. RV. 1, 89, 10. 10, 136, 4. 139, 2. 168, 3. VS. 1, 7, 4, 7. AV. 6, 40, 1. 130, 4. u. s. w. यो अत्ररेणाकाश आसीत्तदत्तरिक्तमभवदीत्तं कैतवाम ततः पुरातरा वा इदमीत्तमभूदिति तस्मादत्तरिक्तम् Çat. Br. 7, 1, 2, 23. अतरिक्ता-यतना वै गर्भः 4, 3, 3, 13. N. 2, 29. Arā. 1, 2. Çik. 118. Vid. 102. अतरिक्त-गतांश्चैव मुनीन्देवांश्च M. 7, 29. Himmel, Lustraum AK. 1, 1, 2, 1. H. 163. pl. die Lüfte: द्यौः क्रन्दत्तरिक्ताणि कोपयत् RV. 10, 44, 8. स्वर्णारम्भ-रिक्ताणि रोचना श्वावभूर्नो पृथिवीं स्वम्भुरोडसा 63, 4. 1, 35, 7. 8, 12, 24. — Wahrscheinlich zusammeng. aus अतर + ईत्त von ईत्त, also durchsich- tig; das zweite Wort kann aber auch अत्त Auge sein. Weber in Ind. St. I, 187. zerlegt das Wort in अतरि (von अतर) + त in der Mitte liegend. — Vgl. अतरिक्त.

अतरिक्तप्रौ (अतरिक्त + प्रा von पर) adj. die Luft durchziehend: आ देवो यातु सविता सूर लो ऽत्तरिक्तप्रा वर्हमानो अश्वैः RV. 7, 43, 1. अतरिक्तप्रा तावेषीभिरावृत्तम् 1, 31, 2. अतरिक्तप्रा रज्ञसो विमानिमुप शिन्ताम्युर्वशो व-सिष्ठः 10, 95, 17. 9, 86, 14.

अतरिक्तप्रुत् (अतरिक्त + प्रुत् von प्रु = सु) adj. die Luft durchschwim- mend: तमूक्युर्नोभिरात्मन्वर्तोभिरत्तरिक्तप्रुदिरपौदकैः RV. 1, 116, 3.

अतरिक्तलोक (अतरिक्त + लोक) m. der Lustraum als eine besondere Welt gefasst: त्रयो लोका एत एव वागेवायं लोको (die Erde) मनो ऽत्तरि-क्तलोकः प्राणो ऽसौ लोकः (der Himmel) Çat. Br. 14, 4, 2, 11. (= Brh. Ār. Up. 1, 5, 4.) कस्मिन्नु खलु वापुरोतश्च प्रोतश्चेत्यत्तरिक्तलोकेषु 6, 8, 1. (= Brh. Ār. Up. 1, 3, 6.) 1, 4, 2, 26. 4, 6, 3, 17. 5, 1, 3, 1. 7, 1, 2, 23. 14, 3, 2, 23. 6, 4, 9. Vgl. Ind. St. II, 225.

अतरिक्तसंशित (अतरिक्त + संशित) adj. von der Luft getrieben AV. 10, 3, 26.

अतरिक्तसैद् (अतरिक्त + सैद् adj.) adj. in der Luft sitzend, sich auf- haltend RV. 4, 40, 5. VS. 9, 2. AV. 10, 9, 12. 11, 8, 12. 12, 4, 79. Kathop. 3, 2.

अतरिक्तसैद्य (von अतरिक्तसैद्) n. der Sitz, der Aufenthalt in der Luft: उपरिसैद्यं वा एष जयति यो जयत्यत्तरिक्तसैद्यम् Çat. Br. 5, 2, 4, 22. 4, 4, 1.

अतरिह्य (von अतरिक्त) adj. der Luft angehörig, luftig: प्रवलतीः